Faizane Jalaaluddeen Suyooti Shaafei (Hindi)

हफ़्तावार रिसाला : 378
Weekly Booklet : 378

फ़ैज़ाने इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه

(सफ़्हात 23)

मिस्र से मक्का 27 क़दम में 01

मजज़ूब बुज़ुर्ग की दुआ 05

"शैख़ुल हदीस" का लक़ब कैसे और किन से मिला ? 11

कौन अपने मुंह से अपनी ता'रीफ़ कर सकता है ? 14

पेशकश :
मजलिसे अल मदीनतुल इल्मिय्या
(दा'वते इस्लामी)

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى خَاتَمِ النَّبِيّٖن ط
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

फ़ैज़ाने इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه

दुआए अत्तार : या रब्बल मुस्तफ़ा ! जो कोई 23 सफ़हात का रिसाला : **"फ़ैज़ाने इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई** رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه" पढ़ या सुन ले उसे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم की सीरत के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुज़ारने की तौफ़ीक़ अता फ़रमा और उस को मां बाप समेत बे हिसाब जन्नतुल फ़िरदौस में दाख़िला नसीब कर । اٰمِيْن بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيّٖن صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

फ़रमाने आख़िरी नबी صَلَّى اللّٰهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم **:** क़ियामत के दिन लोगों में सब से ज़ियादा मेरे क़रीब वोह शख़्स होगा जो सब से ज़ियादा मुझ पर दुरूद शरीफ़ पढ़ता होगा । (ترمذی،2/27،حدیث:484)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللّٰهُ عَلٰى مُحَمَّد

मिस्र से मक्का 27 क़दम में

हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه के ख़ादिमे ख़ास हज़रते मुहम्मद बिन अ़ली हब्बाक رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मिस्र में एक रोज़ क़ैलूला के वक़्त (दोपहर के सोने को क़ैलूला कहते हैं) इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه ने मुझ से फ़रमाया : अगर तुम मेरे फ़ौत होने से पहले इस राज़ को ज़ाहिर न करो तो आज अ़स्र की नमाज़ मक्कए पाक में पढ़ने का इरादा है । मैं ने अ़र्ज़ की : ठीक है । आप ने मेरा हाथ पकड़ा और फ़रमाया : आंखें बन्द कर लो । मैं ने आंखें बन्द कीं तो आप मेरा हाथ पकड़ कर तक़रीबन 27 क़दम चले, फिर फ़रमाया : आंखें खोलो । मैं ने

आंखें खोलीं तो हम जन्नते मअ़्ला (मक्कए पाक के मुबारक क़ब्रिस्तान) के दरवाज़े पर थे। हम ने वहां ह़ज़रते बीबी ख़दीजतुल कुब्रा رَضِیَ اللہُ عَنْهَا, ह़ज़रते फ़ुज़ैल बिन इयाज़ और ह़ज़रते इमाम सुफ़्यान बिन उ़यैना رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْهِمَا वग़ैरा के मज़ारात की ज़ियारत की, फिर ह़रम शरीफ़ में दाख़िल हुए, त़वाफ़ किया, ज़मज़म शरीफ़ पिया और मक़ामे इब्राहीम के पीछे बैठ गए ह़त्ता कि हम ने वहां अ़स्र की नमाज़ अदा की, फिर आप ने मुझ से फ़रमाया : हैरान न हो, हमारे लिये ज़मीन समेट दी गई है, फिर फ़रमाया : अगर साथ चलना चाहो तो ठीक वरना ह़ाजियों के साथ आ जाना। मैं ने अ़र्ज़ की : मैं आप के साथ ही चलूंगा। फिर हम जन्नते मअ़्ला के दरवाज़े तक गए, आप ने मुझ से फ़रमाया : आंखें बन्द कर लो, मैं ने अपनी आंखें बन्द कीं तो वोह मुझे ले कर सात क़दम तेज़ चले और फ़रमाया : आंखें खोलो। मैं ने आंखें खोलीं तो हम मिस्र में मौजूद थे। (الکواکب السائرۃ، 1/229ملخصاً۔ شذرات الذھب، 10/77)

अल्लाह रब्बुल इ़ज़्ज़त की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیب ❀❀❀ صَلَّی اللّٰهُ عَلٰی مُحَمَّد

विलादते बा सआ़दत

दुन्या में सब से ज़ियादा इस्लामी किताबें लिखने वाले उ़लमाए किराम رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْهِم में नवीं सदी के मुजद्दिद, ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस, शैख़ुल इस्लाम ह़ज़रते अ़ल्लामा इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْه भी हैं। आप 849 हिजरी में मग़रिब की नमाज़ के बा'द मिस्र के दारुल हुकूमत (Capital of Egypt) क़ाहिरा शह्र में पैदा हुए। आप को "इब्नुल कुतुब" (या'नी किताबों का बेटा) भी कहा जाता है। इस का वाक़िआ़ बड़ा दिलचस्प है, वोह येह कि आप رَحْمَةُ اللہِ عَلَیْه की वालिदए मोह़तरमा ह़म्ल से थीं कि एक

दिन आप के वालिदे मोह्तरम ने आप की वालिदा को अपनी लायब्रेरी से कोई किताब लाने का फ़रमाया, वोह किताब लेने गईं तो वहीं विलादत का दर्द शुरूअ़ हुवा और इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की किताबों के दरमियान विलादत हो गई। (النور السافر، ص90)

तआ़रुफ़ और अल्क़ाबात

आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ का नाम "अ़ब्दुर्रह्मान" और मश्हूर लक़ब "जलालुद्दीन" है जो वालिदे मोह्तरम की त़रफ़ से अ़त़ा हुवा था। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अपने नाम से ज़ियादा लक़ब से मश्हूर हैं। आप की कुन्यत "अबुल फ़ज़्ल" है, एक मरतबा आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ अपने शैख़ क़ाज़ियुल क़ुज़ाह इ़ज़्ज़ुद्दीन अह़मद बिन इब्राहीम किनानी ह़म्बली رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो उन्हों ने पूछा : आप की कुन्यत क्या है ? आप ने अ़र्ज़ की: मेरी कोई कुन्यत नहीं। तो उन्हों ने फ़रमाया : आप की कुन्यत "**अबुल फ़ज़्ल**" है और अपने हाथ से लिख कर कुन्यत अ़त़ा फ़रमा दी। करोड़ों शाफ़ेइय्यों के इमाम, ह़ज़रत मुह़म्मद बिन इदरीस शाफ़ेई رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के मुक़ल्लिद होने के सबब आप को "शाफ़ेई" कहा जाता है। (النور السافر، ص90)

आबाई शह्र और वालिदैन का तआ़रुफ़

इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ के आबाओ अज्दाद "**उस्यूत़**" नामी शह्र में रहते थे इस लिये आप "सुयूती" और "उस्यूती" कहलाते हैं। आप رَحْمَۃُ اللہِ عَلَیْہ ने अपने इस शह्र की तारीख़ पर "اَلْمَضْبُوطُ فِی اَخْبَارِ السُّیُوط" के नाम से ऐक किताब भी लीखी है। आप के दादाजान भी बहुत बड़े वलिय्युल्लाह थे, उन का मज़ार शरीफ़ मिस्र के शह्र उस्यूत़ में है, लोग वहां ह़ाज़िरी देते और बरकतें ह़ासिल करते हैं। आप के आबाओ अज्दाद शह्र के इ़ज़्ज़त दार लोगों में से थे, बा'ज़ बिज़्नेस मेन और बड़े मालदार थे, उन्हों

ने उस्यूत़ में एक मद्रसा बना कर उस पर कई ज़मीनें वक़्फ़ कीं मगर इल्मे दीन की बड़ी ख़िदमत आप के वालिदे मोह़तरम के ह़िस्से में आई।

(الامام الحافظ جلال الدین سیوطی و جھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص74-حسن المحاضرۃ،1/288، التحدث بنعمۃ اللہ، ص7)

वालिदे मोह़तरम की शानो शौकत

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम रोज़ाना क़ुरआने करीम की तिलावत किया करते थे यहां तक कि हर जुमुए़ को ख़त्मे क़ुरआन फ़रमाते। आप मद्रसए शैख़ूनिय्या में फ़िक़्ह के उस्ताद, जामेअ़ इब्ने तूलून में ख़त़ीब और अ़ब्बासी ख़लीफ़ा के इमामे मस्जिद थे, वोह आप का बड़ा अदबो एह़तिराम करता था। एक मरतबा बादशाह ने ख़लीफ़ा के ज़रीए़ आप से मिस्र का मुफ़्ती बनने की दरख़्वास्त की तो आप ने मा'ज़िरत कर ली। ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه 5 साल के थे जब आप के वालिदे मोह़तरम का 5 सफ़र शरीफ़ 855 हिजरी को पीर शरीफ़ की रात अज़ाने इ़शा के वक़्त इन्तिक़ाल हुवा। वालिदे मोह़तरम चन्द दिन ज़ातुल जम्ब (इसे उर्दू में "नमूनिया" कहते हैं। ह़दीस शरीफ़ में है : ज़ातुल जम्ब की बीमारी से फ़ौत होने वाला शहीद है। (مجمع الزوائد،3/55، حدیث:3880)) के मरज़ में रहे और इसी में उन्हें शहादत नसीब हुई। वालिदे मोह़तरम ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र कमालुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को इन्तिक़ाल के बा'द ख़्वाब में देखने वाले ने कहा : **अल्लाह** पाक ने दुन्या में आप पर तंगी इस लिये फ़रमाई ताकि आख़िरत में आप पर वुस्अ़त फ़रमाए। वालिद साह़िब ने फ़रमाया : ऐसा ही हुवा है। (بغیۃ الوعاۃ،1/472-التحدث بنعمۃ اللہ، ص11-حسن المحاضرۃ،1/370)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِیْن بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللّٰہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

वालिदैन की नेकी का औलाद पर असर

जिस त़रह़ वालिदैन के नेक सूरत होने का औलाद में असर ज़ाहिर होता है ऐसे ही वालिदैन के नेक सीरत (या'नी नेक होने) का औलाद पर ज़रूर असर पड़ता है। अगर वालिदैन नेक, परहेज़गार, आ़लिमे बा अ़मल और मुफ़्तिये इस्लाम हों तो सआ़दत मन्द औलाद भी उन्ही के नक़्शे क़दम पर चलती और दीने इस्लाम की ख़िदमत करती है। इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत से भी येही पता चलता है। आप के वालिदे मोह़तरम के वाक़िआ़त में उन लोगों के लिये भी दर्स है जो अपनी औलाद को राहे सुन्नत पर चलता देखना चाहते हैं। अगर वोह ख़ुद नेक नमाज़ी और सुन्नतों के पैकर बनें और अपनी औलाद को क़ुरआनो सुन्नत की ता'लीम दिलवाएं, अपनी औलाद को ह़ाफ़िज़े क़ुरआन, आ़लिमे दीन बनाएं तो फिर देखें **अल्लाह** पाक की रह़मत से कैसे औलाद बुढ़ापे का सहारा और दुन्या से चले जाने के बा'द इ़ज़्ज़त का बाइ़स बनती है اِنْ شَآءَ الله ।

मजज़ूब बुज़ुर्ग की दुआ़

अपनी औलाद को बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की बरकात और उन के मज़ारात के फ़ुयूज़ात के बारे में भी बताइये बल्कि वक़्तन फ़ वक़्तन उन की बारगाह में ले जाइये क्यूं कि अगर **अल्लाह** वालों की नज़रे करम हो गई और उन की दुआ़एं मिल गईं तो औलाद की ज़िन्दगी संवर जाएगी। इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मेरे वालिदे मोह़तरम मुझे बचपन से उ़लमाओ मशाइख़ (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) की बारगाह में ले जाया करते थे, तीन साल की उ़म्र में इमाम इब्ने ह़जर رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ले गए और फिर एक और वलिय्युल्लाह ह़ज़रते शैख़ मुह़म्मद رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में ले जाया गया, उन्हों ने मेरे लिये बरकत की दुआ़ फ़रमाई। (حسن المحاضرة، 1/288- النور السافر، ص 91)

इब्तिदाई ह़ालात और ता'लीमो तरबियत

ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के वालिदे मोह़तरम ने वफ़ात शरीफ़ से पहले कई लोगों को अपने बेटे की परवरिश वग़ैरा के लिये वसिय्यतें की थीं, फिर बा'द में शैख़ कमालुद्दीन बिन हुमाम ह़नफ़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने "मद्रसए शैख़ूनिय्या" से आप का वज़ीफ़ा जारी कराया और अपनी निगरानी में आप की ता'लीमो तरबियत पर ख़ास़ तवज्जोह दी। आप ने इ़ल्मे ह़दीस अपने ज़माने के बड़े बड़े मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से पढ़ा। (شذرات الذهب، ص75)

इ़ल्मी सफ़र और कमालात

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का ह़ाफ़िज़ा बहुत मज़बूत़ था, आप की उ़म्र अभी आठ साल पूरी न हुई थी कि आप ने क़ुरआने करीम ह़िफ़्ज़ कर लिया फिर छोटी सी उ़म्र में ही बड़ी बड़ी अ़रबी कुतुब "उ़म्दतुल अह़काम", "अल मिन्हाजु लिन्नववी", "अल फ़िय्यतु इब्ने मालिक" और "मिन्हाजुल बैज़ावी" ज़बानी याद कर लीं। आप ने ह़ज़रते अ़ल्लामा शैख़ शहाबुद्दीन शारमसाह़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से विरासत का इ़ल्म ह़ासिल किया। आप ने उ़लूमो फ़ुनून और फ़िक़्ह में इस क़दर महारत ह़ासिल कर ली कि 27 साल की उ़म्र में ही आप को तदरीस व इफ़्ता की इजाज़त मिल गई। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इ़ल्मे दीन ह़ासिल करने के लिये मुल्के शाम, ह़िजाज़े मुक़द्दस (अ़रब शरीफ़), यमन, हिन्द और मग़रिबी ममालिक का सफ़र किया। आप शैख़ जलालुद्दीन मह़ल्ली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की ख़िदमत में एक साल तक हफ़्ते में दो बार ह़ाज़िरी देते रहे और उन के इन्तिक़ाल के बा'द उन की तफ़्सीर जो कि ना मुकम्मल थी उस को मुकम्मल किया जो "तफ़्सीरे जलालैन"

के नाम से मशहूर हुई । (الکواکب السائرہ، ص228،229۔ الامام الحافظ جلال الدین سیوطی و جھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص117۔ حسن المحاضرۃ، ص290)

उस्ताद का ए'तिमाद

इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने एक बार अपने उस्ताज़ साहिब से एक रिवायत के हवाले के बारे में अ़र्ज़ की, उस्ताद साहिब ने अपनी किताब में जिस किताब का हवाला दिया था वोह रिवायत उस किताब में नहीं बल्कि दूसरी किताब में थी, मैं ने जैसे ही उस्ताद साहिब को इस के मुतअ़ल्लिक़ अ़र्ज़ की, उस्ताद साहिब ने उस किताब को देखे बिग़ैर सिर्फ़ मेरे कहने पर अपनी किताब में उस मक़ाम पर ह़ाशिया लगा दिया, जिस से मेरे दिल में अपने उस्ताद साहिब की इ़ज़्ज़त मज़ीद बढ़ गई, मैं ने अपने आप को कमतर समझते हुए अ़र्ज़ की : आप तह़क़ीक़ के लिये थोड़ा रुक भी सकते थे । (حسن المحاضرۃ، 1/289 ماخوذاً)

इस वाक़िए़ से जहां उस्ताद साहिब की आ़जिज़ी व इन्किसार का इज़्हार होता है वहीं ज़हीन तुलबाए किराम की हौसला अफ़्ज़ाई और दिलजूई करने का सबक़ भी मिलता है । उस्ताद साहिब के इस अ़मल से शागिर्द के दिल में उन का मक़ामो मर्तबा मज़ीद बढ़ गया, नीज़ येह बात भी क़ाबिले ग़ौर है कि उस्ताद बन जाने के बा'द अपनी इस्लाह़ का दरवाज़ा बन्द नहीं करना चाहिये, अगर कोई सह़ीह़ बात चाहे शागिर्द ही बताए उसे लेने में शरमाना नहीं चाहिये । आ़जिज़ी करने से इ़ज़्ज़त घटती नहीं बल्कि बढ़ती है । जैसा कि इस वाक़िए़ में इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने ख़ुद इर्शाद फ़रमाया कि उस्ताद साहिब के इस अ़मल से मेरे दिल में अपने उस्ताद साहिब की इ़ज़्ज़त मज़ीद बढ़ गई ।

मिटा दे अपनी हस्ती को अगर कुछ मर्तबा चाहे   कि दाना ख़ाक में मिल कर गुले गुलज़ार होता है

बैअ़तो इरादत

सहीहुल अ़क़ीदा, जामेए़ शराइत़ पीर का मुरीद होना सदियों से मुसल्मानों का त़रीक़ा रहा है क्यूं कि रूहा़नी बरकात औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم के फ़ैज़ान से हा़सिल होती हैं। आज से तक़रीबन साढ़े पांच सो साल पहले के बुज़ुर्ग ह़ज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने भी सिल्सिलए शाज़िलिय्या में ह़ज़रते मुह़म्मद बिन उ़मर शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से बैअ़त की। (الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجهوده فی الحدیث وعلومه، ص120)

तक़्वा व परहेज़ गारी

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इल्मी कमालात के साथ साथ तक़्वा व परहेज़ गारी में भी बड़ा मक़ाम रखते थे। **अल्लाह** पाक की याद में अक्सर गुम रहते, नमाज़े तहज्जुद बा क़ाइदगी से अदा फ़रमाया करते, अगर कभी तहज्जुद की नमाज़ रह जाती तो इतने परेशान होते कि बीमार पड़ जाते।

(सायए अ़र्श किस किस को मिलेगा ?, स. 14)

سُبْحٰنَ الله ! इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की नमाज़े तहज्जुद रह जाती तो उस के ग़म में परेशान हो जाते, काश ! इन के सदक़े हमें भी फ़र्ज़ नमाज़ों के साथ साथ नवाफ़िल का भी शौक़ नसीब हो जाए और हम से कभी तहज्जुद न छूटे।

सुन्नतों को ज़िन्दा किया

अल्लाह पाक के प्यारे प्यारे आख़िरी नबी, मक्की मदनी, मुह़म्मदे अ़रबी صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की सुन्नतों पर चलना हर मुसल्मान के लिये बहुत बड़ी सआ़दत की बात है। हमारे बुज़ुर्गाने दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने सुन्नतों पर अ़मल कर के इन की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई है। ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन

सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ऐसे अ़मल करने वाले थे कि आप उन सुन्नतों को भी अपनाते जिन पर अ़मल करना लोगों ने छोड़ दिया था। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने त़यालसा (या'नी सर और कन्धे ढांपने वाली चादर) ओढ़ने की सुन्नत को ज़िन्दा किया और फिर इस मौज़ूअ़ पर बा क़ाइदा एक किताब "اَلْاَحَادِيْثُ الْحِسَانِ فِيْ فَضْلِ الطَّيْلَسَان" लिखी और अपने शागिर्दों को इस सुन्नत पर अ़मल करने की तरग़ीब इर्शाद फ़रमाई।

(الامام الحافظ جلال الدین سیوطی و جهوده فی الحدیث وعلومه، ص87)

लाखों सलाम हों ऐसे इमाम व उस्ताद पर जो ख़ुद भी सुन्नते मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर अ़मल करने का जज़्बा रखता हो और अपने शागिर्दों को भी इस की तरग़ीब दिलाता हो। काश! हमें अमीरे अहले सुन्नत دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه की इस दुआ़ से ख़ूब ह़िस्सा नसीब हो :

सुन्नत के मुत़ाबिक़ मैं हर इक काम करूं काश
तू पैकरे सुन्नत मुझे अल्लाह ! बना दे

(वसाइले बख़्शिश, स. 118)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

दो लाख अह़ादीस के ह़ाफ़िज़

ह़ज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मुझे दो लाख अह़ादीसे मुबारका ज़बानी याद हैं अगर मुझे इस से ज़ियादा अह़ादीसे मुबारका मिलतीं तो मैं उन्हें भी याद कर लेता। मैं ह़ज के लिये ह़ाज़िर हुवा तो ज़मज़म शरीफ़ पी कर येह दुआ़ मांगी : "इलाही ! मुझे फ़िक़्ह (या'नी दीनी अह़काम) में सिराजुद्दीन बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का और ह़दीस में इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का मर्तबा ह़ासिल हो जाए।" इस दुआ़ की क़बूलिय्यत का अन्दाज़ा इस बात से लगाइये कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ख़ुद

फ़रमाते हैं : (! اَلْحَمْدُ لِلّٰه) मुझे सात उ़लूम में मुकम्मल महारत अ़ता हुई : ﴾1﴿ तफ़्सीर ﴾2﴿ ह़दीस ﴾3﴿ फ़िक़्ह ﴾4﴿ नह़्व ﴾5﴿ मआ़नी ﴾6﴿ बयान ﴾7﴿ बदीअ़ । (حسن المحاضرة، 1/290)

प्यारे प्यारे इस्लामी भाइयो ! अगर ए'तिक़ाद पुख़्ता (या'नी पक्का यक़ीन) हो तो बेशक आबे ज़मज़म पीने के बा'द जो दुआ़ मांगी जाए क़बूल होती है और दुआ़ क़बूल भी क्यूं न हो कि फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم है : "ज़मज़म जिस (मुराद) के लिये पिया जाए उसी के लिये है ।" (ابن ماجہ، 3/490، حدیث:3062)

येह ज़मज़म उस लिये है जिस लिये इस को पिये कोई
इसी ज़मज़म में जन्नत है इसी ज़मज़म में कौसर है

फ़न्ने ह़दीस में महारत

ह़ज़रते अबुल फ़ज़्ल इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه इल्मे ह़दीस के फ़न में ख़ुसूसी महारत रखते थे जिस पर आप की किताबें गवाह हैं । एक बार ह़ज़रते तक़िय्युद्दीन औजाक़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने कुछ ह़दीसें रावियों में रद्दो बदल कर के इम्तिह़ान लेने के लिये इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के पास भेजीं, आप ने उन ह़दीसों को उन के उसूलो मरातिब के साथ बयान कर के वापस भेज दिया तो ह़ज़रते तक़िय्युद्दीन औजाक़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه चल कर आप के पास आए और आप के हाथ चूम कर फ़रमाया : ख़ुदा की क़सम ! मेरे वह्मो गुमान में भी न था कि आप इन में से कुछ जानते होंगे, मुझ से आप के मुतअ़ल्लिक़ जो कुछ हुवा है उसे मुआ़फ़ फ़रमा दीजिये । (فہرس الفہارس، 2/1011، رقم:575)

ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने ज़माने में इल्मे ह़दीस और उसूले ह़दीस को सब से बढ़ कर जानने वाले थे । (فہرس الفہارس، 2/1011، رقم:575)

जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी

शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने उस्तादे मोह़तरम इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में फ़रमाते हैं कि उन्हों ने मुझे बताया : मैं ने जागते हुए रसूले अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो हु़ज़ूर صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने मुझे **"ऐ शैख़ुल ह़दीस"** कह कर पुकारा। मैं ने अ़र्ज़ की : **या रसूलल्लाह** صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ! क्या मैं जन्नती हूं ? इर्शाद फ़रमाया : हां। मैं ने अ़र्ज़ की : क्या बिग़ैर किसी अ़ज़ाब के ? इर्शाद फ़रमाया : तुम्हारे लिये ऐसा ही है। (الکواکب السائرۃ، 1/229)

"शैख़ुल ह़दीस" का लक़ब अ़ता हुवा

इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : मैं ने ख़्वाब में सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत की तो मैं ने ह़दीस में अपनी किताब "जम्उ़ल जवामेअ़" का ज़िक्र कर के अ़र्ज़ की : क्या मैं इस में से कुछ आप के सामने पढ़ूं ? इर्शाद फ़रमाया : सुनाओ ! शैख़ुल ह़दीस। इमाम जलालुद्दीन सुयूती़ رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه कहते हैं : नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم का मुझे "शैख़ुल ह़दीस" कहना मेरे लिये ऐसी बिशारत (या'नी ख़ुश ख़बरी) है जो मेरे नज़्दीक दुन्या व मा फ़ीहा (या'नी दुन्या और जो कुछ दुन्या में है उस) से बड़ी है। एक मक़ाम पर यूं तह़्दीसे ने'मत (या'नी अपने ऊपर होने वाली **अल्लाह** पाक की ने'मत को मश्हूर करने) के तौ़र पर फ़रमाया : इस वक़्त मशरिक़ से ले कर मग़रिब तक रूए ज़मीन में कोई शख़्स ऐसा नहीं है जो ह़दीस और अ़रबिय्यत में मुझ से ज़ियादा इ़ल्म रखता हो सिवाए ह़ज़रते ख़िज़्र عَلَيْهِ السَّلَام और किसी क़ुत़्ब या वलिय्युल्लाह के।

(मुह़द्दिसीने इ़ज़ाम, ह़यात व ख़िदमात, स. 605)

बेदारी में 75 मरतबा ज़ियारते रसूल

हज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को एक शख़्स ने ख़त़ लिखा कि सुल्त़ान क़ाइतबाई से मेरी सिफ़ारिश कर दीजिये तो आप ने कुछ इस त़रह़ उस को जवाब लिखा : ऐ मेरे भाई ! मैं इस वक़्त तक जागते हुए 75 मरतबा रसूले पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मुशर्रफ़ हो चुका हूं। अगर मुझे ख़ौफ़ न होता कि हुक्मरानों से मुलाक़ात के सबब नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत से मह़रूम हो जाऊंगा तो तुम्हारी सिफ़ारिश के लिये सुल्त़ान के पास ज़रूर जाता। मैं एक ख़ादिमे ह़दीस हूं, जिन ह़दीसों को मुह़द्दिसीने किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने अपनी तह़क़ीक़ में ज़ईफ़ कहा है उन की तस्ह़ीह़ के लिये हुज़ूरे अकरम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मोह़ताज हूं और बिला शुबा इस का फ़ाएदा तुम्हारे ज़ाती फ़ाएदे से बढ़ कर है।

(میزان الکبری للشعرانی، ص55)

रोज़ाना दीदारे मुस्त़फ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

पीरे त़रीक़त, ह़ज़रते नूर मुह़म्मद महारवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की मह़फ़िल में ह़ज़रते अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताबों का ज़िक्र हो रहा था कि आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने फ़रमाया : उन्हें हर रोज़ जागते में सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ियारत होती थी। वोह नमाज़े सुब्ह़ के बा'द तन्हाई से उस वक़्त तक बाहर नहीं आते थे जब तक उन्हें येह सआ़दत ह़ासिल न हो जाती, फिर फ़रमाया : अब भी ऐसे शख़्स मौजूद हैं लेकिन बा'ज़ लोग बिला वज्ह ऐसे वाक़िआ़त का इन्कार कर देते हैं। (خلاصۃ الفوائد، ص52 ملخصاً)

असातिज़ा और तलामिज़ा

ह़ज़रते अबुल फ़ज़्ल इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه अपने असातिज़ा की ता'दाद के बारे में लिखते हैं कि जिन

से मैं ने सुना और जिन्हों ने मुझे सनदे इजाज़त दी और जिन्हों ने मुझे एक शे'र भी सिखाया है, उन की ता'दाद तक़रीबन 600 है जब कि ख़ास शुयूख़ (या'नी असातिज़ा) की ता'दाद 150 है । (التحدث بنعمۃ اللہ، ص43) आप के शागिर्दों की ता'दाद भी बहुत ज़ियादा है। सीरते मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم पर मश्हूर अ़रबी किताब "सुबुलुल हुदा वर्रशाद" लिखने वाले हाफ़िज़ुल ह़दीस मुह़म्मद बिन यूसुफ़ शामी सालेही शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه भी आप के शागिर्द हैं।

तदरीसी ख़िदमात

867 हिजरी में आप मद्रसए शैख़ूनिय्या में अपने वालिदे मोह़तरम की जगह फ़िक़्ह के उस्ताज़ मुक़र्रर हुए। 871 हिजरी में आप ने फ़तवे लिखने शुरूअ़ कर दिये । देखते ही देखते आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के फ़तावा मशरिक़ो मग़रिब, अ़रबो अ़जम में मश्हूर हो गए। तह़दीसे ने'मत (या'नी अपने ऊपर होने वाली **अल्लाह** पाक की ने'मत को मश्हूर करने की निय्यत से) फ़रमाते हैं : मैं ने इतने फ़तवे दिये हैं कि उन की सह़ीह़ ता'दाद **अल्लाह** पाक ही जानता है । जिन मसाइल में मुझ से मेरे ज़माने के उ़लमा ने इख़्तिलाफ़े राय किया, मैं ने उन में से हर मस्अले पर अलग अलग किताबें लिखीं जो 50 से ज़ाइद हैं और इस वक़्त मेरे फ़तावा की तीन जिल्दें हैं।
(الامام الحافظ جلال الدین سیوطی و جھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص161، 163)

872 हिजरी में आप ने जामेअ़ तूलूनी में ह़दीस शरीफ़ का इम्ला कराना (या'नी लिखवाना) शुरूअ़ किया, जहां आप से पहले ह़ाफ़िज़ुल ह़दीस इमाम इब्ने ह़जर अ़स्क़लानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ह़दीसे पाक लिखवाया करते थे, उन के इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द 20 साल तक येह सिलसिला बन्द रहा। इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने येह सिलसिला दोबारा शुरूअ़

www.dawateislami.net

किया। 877 हिजरी में आप मद्रसए शैख़ूनिय्या में शैख़ुल ह़दीस के मन्सब पर पहुंच गए। (التحدث بنعمۃ اللہ، ص88تا90)

पहली तस्नीफ़

ह़ज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने 17 साल की उ़म्र में किताबें लिखने का आग़ाज़ फ़रमाया और पहली किताब "شَرْحُ الْاِسْتِعَاذَةِ وَالْبَسْمَلَة" लिखी। आप के उस्ताद ह़ज़रते शैख़ इ़ल्मुद्दीन बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने इस किताब को देखा तो पसन्द फ़रमाया और उस पर तक़्रीज़ (या'नी उस किताब पर अपनी राय) भी लिखी। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की अक्सर किताबें आप की मुबारक ज़िन्दगी ही में अ़रब शरीफ़, शाम, रूम, हिन्द, यमन और मग़रिबी ममालिक में मश्हूर हो चुकी थीं, बल्कि इस बारे में एक ईमान अफ़रोज़ ख़्वाब देखा गया।

मक़्बूलिय्यत की ख़ुश ख़बरी

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के एक शागिर्द ने ख़्वाब देखा और ह़ज़रते शैख़ सालेह़ मुह़िब्बुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه से बयान किया तो उन्हों ने येह ता'बीर इर्शाद फ़रमाई : इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه का इ़ल्म उन के इन्तिक़ाल शरीफ़ से पहले पहले मशरिक़ो मग़रिब में फैल जाएगा। (التحدث بنعمۃ اللہ، ص155)

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताबें लिखने की रफ़्तार बहुत तेज़ थी, आप के शागिर्द अ़ल्लामा शम्सुद्दीन رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं : मैं ने उस्तादे मोह़तरम को देखा है कि आप एक दिन में तीन तीन कॉपियां लिखते और इस के साथ साथ ह़दीस शरीफ़ लिखवाते और सुवालात के जवाबात भी इर्शाद फ़रमाते थे। (الکواکب السائرہ، 1/228)

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : अगर आप की कोई करामत न भी होती तो तक़्दीर पर ईमान रखने वाले के लिये आप

की इतनी अहम और नाज़ुक मौज़ूआत पर बड़ी बड़ी किताबें ही आप की अ़ज़्मतो शान पर गवाह हैं। (जामेअ़ करामाते औलिया, 2/197)

आप ख़ुद तह़दीसे ने'मत (या'नी अपने ऊपर होने वाली **अल्लाह** पाक की ने'मत को मश्हूर करने) के तौ़र पर अपनी 18 किताबों के बारे में फ़रमाते हैं : मेरे इ़ल्म के मुत़ाबिक़ इन जैसी किताबें दुन्या में किसी ने नहीं लिखीं और मौजूदा दौर में भी कोई नहीं लिख सकता। (التحدث بنعمة الله، ص105)

"इमाम जलालुद्दीन" के 13 हुरूफ़ की निस्बत से 13 किताबों के नाम

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के बारे में 600 किताबें लिखने का क़ौल मिलता है, आप की सेंकड़ों कुतुब में से सिर्फ़ 13 किताबों के नाम बरकत ह़ासिल करने के लिये पेश किये जाते हैं :

﴿1﴾ اَلْاِتْقَانُ فِیْ عُلُوْمِ الْقُرْاٰنْ ﴿2﴾ اَلدُّرُّ الْمَنْثُوْرُ فِی التَّفْسِیْرِ الْمَاْثُوْر ﴿3﴾ حَاشِيَةٌ عَلٰی تَفْسِیْرِ الْبَیْضَاوِی ﴿4﴾ اَلدِّیْبَاجُ عَلٰی صَحِیْحِ مُسْلِمِ بْنِ الْحَجَّاج ﴿5﴾ مِرْقَاةُ الصَّعُوْدُ اِلٰی سُنَنِ اَبِی دَاوٗد ﴿6﴾ شَرْحُ ابْنِ مَاجَه ﴿7﴾ تَدْرِیْبُ الرَّاوِیْ فِیْ شَرْحِ تَقْرِیْبِ النَّوَوِی ﴿8﴾ اَللَّآلِی الْمَصْنُوْعَةُ فِی الْاَحَادِیْثِ الْمَوْضُوْعَةِ ﴿9﴾ شَرْحُ الصُّدُوْرِ بِشَرْحِ حَالِ الْمَوْتٰی وَالْقُبُوْر ﴿10﴾ فَضْلُ مَوْتِ الْاَوْلَادِ ﴿11﴾ خَصَائِصُ یَوْمِ الْجُمُعَةِ ﴿12﴾ اَلطِّبُّ النَّبَوِی ﴿13﴾ اَخْبَارُ الْمَلَائِکَةِ۔

नेकी के इज़्हार की कब इजाज़त है ?

ऐ आ़शिक़ाने रसूल ! नेक काम करने के बा'द लोगों के सामने अपने ऊपर **अल्लाह** पाक की उस ने'मत को मश्हूर करने के तौ़र पर बयान करना "**तह़दीसे ने'मत**" कहलाता है। शरीअ़त में इस के बारे में हुक्म येह

है कि जिस शख़्स (आ़लिमे दीन या बुज़ुर्ग) को लोग Follow (या'नी उस की पैरवी) करते हों उन के लिये लोगों पर अपनी नेकी ज़ाहिर करना अफ़्ज़ल है ताकि लोग उन की सीरत पर अ़मल करें और अगर लोगों से अपनी ता'रीफ़ करवाना मक़्सूद हो तो येह गुनाह है। (حدیقہ ندیہ،2/374 مفہوماً)

इमामे अहले सुन्नत, आ'ला ह़ज़रत इमाम अह़मद रज़ा ख़ान رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : ख़ुद सिताई (या'नी ख़ुद अपनी ता'रीफ़ करना) जाइज़ नहीं मगर ज़रूरत के वक़्त ह़क़ीक़त ज़ाहिर करने के लिये तह़दीसे ने'मत है, या'नी अपनी ता'रीफ़ ख़ुद करने की इजाज़त है।

(मल्फ़ूज़ाते आ'ला ह़ज़रत, स. 141 तस्हीलन)

कौन अपने मुंह से अपनी ता'रीफ़ कर सकता है ?

बुज़ुर्गाने दीन, उ़लमाए दीन رَحْمَةُ اللّٰهِ عَلَيْهِم का तह़दीसे ने'मत के तौ़र पर अपने नेक अ़मल का इज़्हार करना रियाकारी नहीं बल्कि इन ह़ज़रात के लिये सवाब का काम है। क्यूं कि इन के नेक अ़मल को सुन कर इन के चाहने वाले उस पर अ़मल करेंगे तो इन को भी उस अ़मल का सवाब मिलेगा मगर हर एक को अपना अ़मल ज़ाहिर करते वक़्त एक सो एक (101) बार अपने दिल की कैफ़िय्यत पर ग़ौर कर लेना चाहिये क्यूं कि शैत़ान बड़ा धोकेबाज़ है, हो सकता है कि हम जैसे कमज़ोरों को वोह येह लफ़्ज़ कहलवा कर अपना नेक अ़मल लोगों पर ज़ाहिर करने पर उभारे और रियाकारी में मुब्तला कर दे, मसलन दिल में वस्वसा डाले कि लोगों से कह दे : "मैं तो सिर्फ़ तह़दीसे ने'मत के लिये अपना अ़मल बता रहा हूं।" ह़ालां कि दिल में लड्डू फूट रहे हों कि इस त़रह़ बताने से लोगों के दिलों में मेरी इ़ज़्ज़त बढ़ जाएगी। येह यक़ीनन रियाकारी है और साथ में तह़दीसे ने'मत

का कहना रियाकारी दर रियाकारी और साथ ही झूट के गुनाह की तबाहकारी भी है। तफ़्सीली मा'लूमात के लिये मक्तबतुल मदीना की किताब ''रियाकारी (166 सफ़हात)'' पढ़िये।

या रब्बे मुस्तफ़ा ! हमें इख़्लास के साथ इबादत करने की सआदत नसीब फ़रमा और हमें शैतान के हीले बहानों की पहचान अता फ़रमा जिन के ज़रीए वोह हमारे आ'माल बरबाद कर दिया करता है।

اٰمِين بِجَاهِ خَاتَمِ النَّبِيِّين صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم

कर इख़्लास ऐसा अता या इलाही   मेरा हर अमल बस तेरे वासिते हो

(वसाइले बख़्शिश, स. 105)

मुज्तहिद और मुजद्दिद होने का बयान

इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने एक किताब ''اَلتَّحَدُّثُ بِنِعْمَةِ الله'' लिखी है। जिस में आप ने अपने ऊपर होने वाली **अल्लाह** पाक की इनायात और फ़ज़्लो करम का बयान किया है। आप उस किताब में फ़रमाते हैं : मैं मर्तबए इज्तिहाद पर पहुंचने के बा वुजूद फ़तवा देने में इमाम शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मज़हब से बाहर नहीं निकला और मैं ने अपने इज्तिहाद (या'नी मुज्तहिद होने) का दा'वा बतौरे फ़ख़्र नहीं किया बल्कि तहदीसे ने'मत और शुक्रे इलाही के लिये किया है। (التحدث بنعمة الله، ص90۔ حسن المحاضرة، 1/290ماخوذاً) एक मक़ाम पर आप ने यूं इर्शाद फ़रमाया कि **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से मुझे पक्की उम्मीद है कि वोह मुझे इस 9वीं सदी का मुजद्दिद होने की ने'मत से नवाज़ेगा। (التحدث بنعمة الله، ص227)

इमाम जलालुद्दीन सुयूती शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के तज्दीदी कारनामों और बहुत बड़ी दीनी व इल्मी ख़िदमात की वज्ह से आप के बा'द आने वाले उलमाए किराम मसलन हज़रते अल्लामा अली क़ारी, आ'ला हज़रत

इमाम अह़मद रज़ा ख़ान और अ़ल्लामा अ़ब्दुल ह़य्य लखनवी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم ने आप को नवीं सदी का मुजद्दिद क़रार दिया।

(مرقاۃ المفاتیح، 1/507-حاشیۃ اعلیٰ حضرت علی المقاصد الحسنۃ، ص2- التعلیق الممجد علی موطا محمد، 1/102)

मसाइबो आलाम पर सब्र

औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم की सीरत का मुत़ालआ़ करें तो एक चीज़ उन की मुबारक ज़िन्दगी में बड़ी नुमायां त़ौर पर नज़र आती है और वोह है आने वाली मुसीबतों और आफ़तों पर सब्रो रिज़ा का पैकर बने रहना। ह़ज़रते इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की सीरत में येह वस्फ़ भी नुमायां नज़र आता है।

आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه को मुख़ालिफ़ीन व ह़ासिदीन की त़रफ़ से भी बहुत तकालीफ़ पहुंचीं मगर आप ने सब्रो रिज़ा का दामन न छोड़ा और अपने मुख़ालिफ़ीन व ह़ासिदीन को बुरा भला न कहा। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के शागिर्द अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़ादिर शाज़िली رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : हमारे शैख़ ने बहुत तकालीफ़ उठाईं लेकिन इस के बा वुजूद कभी मैं ने उन को तक्लीफ़ देने वाले ह़ासिदीन पर बददुआ़ करते, बुरा भला कहते नहीं सुना बल्कि आप येह कहते : "حَسْبُنَا اللهُ وَنِعْمَ الْوَكِيْل" या'नी हमारे लिये **अल्लाह** पाक ही काफ़ी है और वोह क्या ही अच्छा कारसाज़ है। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : "कुछ लोग मेरी दुश्मनी और मुझे तक्लीफ़ पहुंचाने पर तुले हुए थे, मैं इसे **अल्लाह** पाक की ने'मत शुमार करता हूं ताकि मुझे भी अम्बियाओ मुरसलीन عَلَيْهِمُ السَّلَام के मुबारक त़रीक़े पर चलने (या'नी मुसीबतों पर सब्र करने वग़ैरा) से कुछ ह़िस्सा मिले।"

(الامام الحافظ جلال الدین سیوطی و جھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص90)

मुख़ालिफ़ीन को मुआ़फ़ कर दिया

इमाम अ़ब्दुल वह्हाब शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बयान करते हैं कि मुझे शैख़ शुऐ़ब رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने बताया कि मैं ने इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इन्तिक़ाल शरीफ़ के वक़्त उन की ख़िदमत में ह़ाज़िर होने वाले मुख़ालिफ़ीन व ह़ासिदीन को मुआ़फ़ करने के मुतअ़ल्लिक़ पूछा तो आप ने इर्शाद फ़रमाया : मेरे भाई ! मैं ने तो उन्हें उसी वक़्त मुआ़फ़ कर दिया था जब उन्हों ने मेरी ह़क़ तलफ़ी की थी। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने वफ़ात शरीफ़ के वक़्त अपने पास मौजूद लोगों से इर्शाद फ़रमाया : गवाह हो जाओ ! मैं ने उन सब लोगों को मुआ़फ़ कर दिया जिन के मुतअ़ल्लिक़ मुझे येह ख़बर मिली है कि वोह मेरी इ़ज़्ज़त के पीछे पड़े हुए हैं, अलबत्ता मैं उन लोगों को ज़ज्रन (या'नी डांट के तौ़र पर) मुआ़फ़ नहीं करता जिन्हों ने उ़लमा की इ़ज़्ज़त पर हाथ डाला है। (الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص90۔ جامع کرامات اولیاء، 2/196 مفہوماً)

बे अदबों का बुरा अन्जाम

इमाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه जिन दिनों ख़ानक़ाहे बीबरसिय्या में शैख़ुस्सूफ़िया के मन्सब पर थे, वहां लोगों को माले वक़्फ़ में ग़ैर शरई काम करते देखा तो आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने उन्हें नेकी की दा'वत देते हुए इन कामों से रोका। बजाए समझने और शुक्रिय्या अदा करने के उन बद नसीबों ने مَعَاذَ اللّٰه आप पर ह़म्ला कर दिया और आप को मारा। इमाम शा'रानी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम अ़ल्लामा जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के मुआ़फ़ करने के बा वुजूद उन लोगों पर वलिय्युल्लाह की बे अदबी व तौहीन की येह नुहू़सत ज़ाहिर हुई कि वोह लोगों के नज़्दीक क़ाबिले नफ़रत बन गए, उन्हें अपने इ़ल्म से नफ़्अ़ उठाना नसीब न हुवा, बा'ज़ ह़राम खाने में मुब्तला हुए और बा'ज़ उ़लमा व औलिया (رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم) की तरदीद जैसे

बुरे काम में पड़े और उन पर बद बख़्ती की अ़लामतें ज़ाहिर हो गईं। मैं ने उन में से एक शख़्स (जिस ने खुद इक़्रार किया था कि मैं ने مَعَاذَالله अपनी चप्पल शैख़ के कन्धे पर मारी थी) को इस ह़ाल में देखा कि ग़ुर्बत के सबब नफ़्सानी ख़्वाहिशात से मग़्लूब हो कर ह़राम खाने में पड़ा हुवा है। जब वोह मरा तो कोई भी उस के जनाज़े के साथ न गया। (لواقح الانوار القدسیہ، ص303 مفہوماً)

मुस्तक़्बिल की ख़बरें

इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه ने एक मरतबा कुछ लोगों के सामने फ़रमाया : "सुल्त़ाने मिस्र जान बलात़ के बा'द फ़ुलां शख़्स सल्त़नत का वाली होगा।" मिस्र में येह बात फैल गई यहां तक कि आप की पेशीन गोई पूरी हुई। (जामेअ़ करामाते औलिया, 2/157 मुलख़्ख़सन)

तुम्हारे मुंह से जो निकली वोह बात हो के रही   कहा जो दिन को कि शब है तो रात हो के रही

ग़मों की इन्तिहा

आप رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه ने अपनी ज़िन्दगी में ही अपने तमाम घर वालों की वफ़ात का ग़म बरदाश्त किया, आप इर्शाद फ़रमाते हैं : मेरे अक्सर भाइयों और बेटे बेटियों की शहादत हुई है, कोई त़ाऊ़न से, कोई निफ़ास से और कोई ज़ातुल जम्ब (नमूनिया) के मरज़ से और मुझे भी **अल्लाह** पाक के फ़ज़्ल से शहादत की उम्मीद है। (التحدث بنعمۃ اللہ، ص10)

अल्लाह पाक से उम्मीद की बरकत ज़ाहिर हुई और आप को भी शहादत मिली, वोह यूं कि इन्तिक़ाल शरीफ़ से पहले आप के बाएं हाथ में शदीद वरम आ गया था और आप رَحۡمَةُ اللهِ عَلَيۡه सात दिन तक इसी मरज़ में रह कर इन्तिक़ाल फ़रमा गए। (شذرات الذھب، ص78)

ह़दीसे पाक में है : "مَنۡ مَاتَ مَرِيۡضًا مَاتَ شَهِيۡدًا" या'नी जो बीमारी की ह़ालत में मरा वोह शहीद है। (ابن ماجہ، 2/277، حدیث:1615)

मालो दौलत से बे परवाई

वफ़ात शरीफ़ से कुछ अ़र्से पहले इमाम जलालुद्दीन सुयूती رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दर्सो तदरीस और फ़तवा देना छोड़ दिया और आख़िरी वक़्त तन्हाई में इबादतो रियाज़त और किताबें लिखने में गुज़ारा। इस दौरान हुक्मरान आप की ज़ियारत के लिये आते और क़ीमती तोह़फ़े पेश करते लेकिन आप क़बूल न फ़रमाते। एक मरतबा सुल्त़ान अशरफ़ ग़ौरी ने आप की ख़िदमत में एक ग़ुलाम और एक हज़ार दीनार (सोने के सिक्के) भेजे, आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने दीनार वापस कर दिये और ग़ुलाम को आज़ाद कर के रौज़ए रसूल का ख़ादिम बना दिया, फिर पैग़ाम देने वाले के हाथ सुल्त़ान को पैग़ाम भेजा कि आइन्दा कोई तोह़फ़ा हमारे पास न आए, **अल्लाह** पाक ने हमें इन तोह़फ़ों (Gifts) से मुस्तग़नी (या'नी बे परवा) कर दिया है। (الکواکب السائرۃ، 1/229)

इन्तिक़ाल शरीफ़

पैकरे इ़ल्मो अ़मल ह़ज़रते अबुल फ़ज़्ल इमाम अ़ब्दुर्रह़मान बिन अबू बक्र सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने सात दिन तक बाएं हाथ के वरम में मुब्तला रह कर बरोज़ जुमुअ़तुल मुबारक 19 जुमादल ऊला 911 हि. मुत़ाबिक़ 17 अक्तूबर 1505 ई. को दरियाए नील के किनारे वाक़ेअ़ रौज़तुल मिक़्यास में इन्तिक़ाल फ़रमाया और क़ाहिरा में बाबे क़राफ़ा के क़रीब आप की तदफ़ीन हुई। आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की क़मीसे मुबारक और पियाला शरीफ़ ग़ुस्ल देने वाले ने (वुरसा की इजाज़त से) ले लिया फिर उस से किसी ने हुसूले बरकत के लिये वोह क़मीस पांच दीनार में ख़रीद ली और एक दूसरे शख़्स ने बरकत ह़ासिल करने के लिये तीन दीनार में पियाला ख़रीद लिया। (الکواکب السائرۃ، 1/231- الامام الحافظ جلال الدین سیوطی وجھودہ فی الحدیث وعلومہ، ص 82)

अल्लाह पाक की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी बे ह़िसाब मग़्फ़िरत हो। اٰمِین بِجَاہِ خَاتَمِ النَّبِیّٖن صَلَّی اللہُ عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم

बुज़ुर्गों की इस्ति'माल की हुई चीज़ों से बरकत ह़ासिल करना

अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ السَّلَام और औलियाए किराम رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْهِم से निस्बत रखने वाली अश्या से बरकत ह़ासिल करना सदियों से मुसल्मानों का त़रीक़ा रहा है। सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان प्यारे आक़ा صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم से निस्बत रखने वाली अश्या को ह़ासिल करने की कोशिश करते थे और उस से अपने मरीज़ों का इलाज करते थे जैसा कि मक़ामे हुदैबिया पर नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم ने बाल मुबारक बनवा कर तमाम मूए मुबारक एक सब्ज़ दरख़्त पर डाल दिये। तमाम सह़ाबए किराम رَضِيَ اللهُ عَنْهُم उसी दरख़्त के नीचे जम्अ़ हो गए और एक दूसरे से मूए मुबारक लेने लगे। सह़ाबिया ह़ज़रते उम्मे अ़म्मारा رَضِيَ اللهُ عَنْهَا फ़रमाती हैं : मैं ने भी चन्द बाल मुबारक ह़ासिल किये। नबिय्ये पाक صَلَّى اللهُ عَلَيْهِ وَاٰلِهٖ وَسَلَّم के ज़ाहिरी विसाल शरीफ़ के बा'द जब कोई बीमार होता तो मैं उन मुबारक बालों को पानी में डुबो कर मरीज़ को पानी पिलाती तो **अल्लाह** पाक मरीज़ को शिफ़ा अ़त़ा फ़रमा देता। (مدارج النبوت، 2/217)

सूखे धानों पे हमारे भी करम हो जाए   *छाए रह़मत की घटा बन के तुम्हारे गेसू*

(ह़दाइक़े बख़्शिश, स. 120)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيب ❀❀❀ صَلَّى اللهُ عَلٰى مُحَمَّد

ता'रीफ़ी कलिमात

इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के अ़ज़ीमुश्शान इ़ल्मी कारनामों की वज्ह से दुन्या ने आज तक उन्हें याद रखा है। तक़रीबन पांच सो साल गुज़र जाने के बा वुजूद अब तक आ़लिम कोर्स (दर्से निज़ामी) में आप की लिखी हुई बा'ज़ किताबें पढ़ाई जाती हैं। येही नहीं बल्कि सदियों से उ़लमाए किराम आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के इ़ल्मी कामों को सराहते और आप की ता'रीफ़ बयान करते आ रहे हैं जैसा कि :

﴾1﴿ आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के उस्तादे मोह़तरम क़ाज़ियुल क़ुज़ाह, ह़ज़रत इल्मुद्दीन बुल्क़ीनी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه ने अपने क़ाबिल तरीन शागिर्द इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه के ज़मानए त़ालिब इल्मी में लिखी हुई दो किताबें देखीं तो कुछ इस त़रह़ ता'रीफ़ की : "मैं ने इन दो किताबों में बहुत फ़ाएदे देखे हैं, इन्हें अच्छी बातों और ख़ूब सूरत अल्फ़ाज़ से लिखा गया है, ह़क़ येह है कि येह दोनों किताबें आप की फ़ज़ीलत ज़ाहिर कर रही हैं। **अल्लाह** पाक किताब लिखने वाले की कोशिश क़बूल फ़रमाए।" (التحدث بنعمۃ اللہ، ص137)

﴾2﴿ इमाम नज्मुद्दीन मुह़म्मद बिन मुह़म्मद ग़ज़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه बड़े आलिम, इमाम, मुह़क़्क़िक़, ह़ाफ़िज़े ह़दीस और शैख़ुल इस्लाम हैं और आप رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه की किताबें बड़ी फ़ाएदा पहुंचाने वाली हैं। (الکواکب السائرۃ، 1/227ملتقطاً)

﴾3﴿ शैख़ुस्सूफ़िया अ़ल्लामा अ़ब्दुल क़ादिर ऐदरूस हिन्दी رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه फ़रमाते हैं : इमाम जलालुद्दीन सुयूत़ी शाफ़ेई رَحْمَةُ اللهِ عَلَيْه साह़िबे करामात बुज़ुर्ग हैं। आप के इन्तिक़ाल शरीफ़ के बा'द आप की बहुत सी करामात ज़ाहिर हुईं, **अल्लाह** पाक की आप पर रह़मत हो। (النور السافر، ص91)

येह रिसाला पढ़ कर दूसरे को दे दीजिये

शादी ग़मी की तक़रीबात, इज्तिमाआ़त, आ'रास और जुलूसे मीलाद वग़ैरा में मक्तबतुल मदीना के शाएअ़ कर्दा रसाइल और मदनी फूलों पर मुश्तमिल पेम्फ़लेट तक़्सीम कर के सवाब कमाइये, गाहकों को ब निय्यते सवाब तोह़फ़े में देने के लिये अपनी दुकानों पर भी रसाइल रखने का मा'मूल बनाइये, अख़्बार फ़रोशों या बच्चों के ज़रीए़ अपने मह़ल्ले के घर घर में माहाना कम अज़ कम एक अ़दद सुन्नतों भरा रिसाला या मदनी फूलों का पेम्फ़लेट पहुंचा कर नेकी की दा'वत की धूमें मचाइये और ख़ूब सवाब कमाइये।

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ

अगले हफ़्ते का रिसाला